

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.  
—: इस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक १५२०६ (८६४)

ग्रंथ नाम रिवाजो मराठाजोचे

प्रकाशन १८९८ चरित.

विषय म० गाय.

वि. का. राजवडे.

बिनमोळ.

महालडराव  
कृत

द्विवद्वयपतीचे प्रकरणासु  
चरित्र संपूर्ण.

उत्तम अश्वर न कागद-

काव्येतिहास संभवकारांच्या

दफतरातील.

माठकी. रा. सा. साने पांची.



(1)

श्री

~~श्री विष्णु दत्त अवतारी भवति~~

(IA) ~~कृष्णदत्त द्वितीय अवतारी~~

~~श्री विष्णु दत्त अवतारी भवति~~

~~रामदत्त अवतारी भवति~~

~~महाताराजी विष्णु दत्त अवतारी~~

~~कृष्णदत्त अवतारी~~

(B) ~~दत्त अवतारी भवति~~

~~महाताराजी विष्णु दत्त अवतारी~~

~~पुनर्जन्म उभयं दत्त अवतारी~~

~~दत्त अवतारी भवति~~

~~पुनर्जन्म उभयं दत्त अवतारी~~

(C) ~~दत्त अवतारी भवति~~

(१५) देवानन्दालोकित्वा गतवामदापि रहे  
द्युमिष्ठानां ज्ञानां द्येत्वा भृत्यां

चेदादेहस्तानां द्येत्वा भृत्यां

ग्रन्थानां द्येत्वा भृत्यां

(१६) द्यात्वा भृत्यां मेष्टानां ज्ञानां द्येत्वा भृत्यां

द्यात्वा भृत्यां द्येत्वा भृत्यां

द्यात्वा भृत्यां द्येत्वा भृत्यां

द्यात्वा भृत्यां द्येत्वा भृत्यां

(१७) भृत्यां द्येत्वा भृत्यां द्येत्वा भृत्यां

द्यात्वा भृत्यां द्येत्वा भृत्यां

३१ रामानुजातीतिशयमेवेद्यकोर्त्त  
विभवात्यसीधीनीत्तत्त्वात्पुणी  
रुपलिङ्गुणयेवेष्टयात्प्रे  
द्यत्तमुख्याद्यदीन्द्रियाद्यात्प्रे  
ष्टात्यमस्त्राद्यगत्तमलीला  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
प्रायान्मूर्त्तात्प्रेष्ट्यजरकर्त्त  
मराहित्तर्णद्यत्तमपात्प्रेष्ट्यात्प्रे  
गेष्ट्येत्तद्यद्येत्तिगत्तनुष्ट्रिलेव  
३२ शिराक्षेपद्येवत्तमासीद्यात्प्रे  
द्यत्तमन्यात्प्रेष्ट्येत्तमीत्तमात्प्रे  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
३३ अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
३४ द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
३५ द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय  
द्यत्तमेवात्प्रे अन्नेन्नांत्रोष्ट्रय

Chaitanya  
Sri Chaitanya  
Mandir, Dhule and the Yashoda  
Vrindavan

~~ଶ୍ରୀମତୀ କର୍ମଚାରୀ ପାତ୍ର କର୍ମଚାରୀ~~

ताच्छान्त्रिम्भवाग्निर्विद्युत्प्रभ

पाठ्यनिषेदी निष्पत्ति का उद्देश्य

સુરતિપાત્રાનુભવ અને રમેયાનુભવ

ତେଜବନ୍ଧୁମହାଯଜ୍ଞାନୁଷ୍ଠାନ

स्त्री अपेक्षा पुरुषान्वयनम्

ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣମାତ୍ରମିଦ୍ଦର୍ଶନରେ ପରମାପଦାର୍ଥକାଳୀନ

उवाच पितृ लोक इति विद्या एवं धर्म

~~ତକ୍ଷାନୁଭାବିତମାର୍ଗାଧିକାରିତାରେ~~

ମନ୍ଦିରରୁ କାହିଁଏହା ଅଗ୍ରିଧେଇ ମଧ୍ୟରେ

ଯେତିକୁଟାରା ନାହିଁ କିମ୍ବା କାହାରେ  
Shodhan Mandir, Bhadrangha Yashwantrao

Chavani

~~Digitized by srujanika@gmail.com~~

~~ଶ୍ରୀମତେବେଦନ ଲାହୋରୁ ମଧ୍ୟାମାତ୍ର~~

~~तज्ज्वरो या रक्त-निकाता गोलीदून नाते~~

परामृष्टेहेष्यं च श्रावणे पश्य

କରାନ୍ତିମିଳାପାଦିତକାହାକୁ

~~બ્રહ્માણ્ડાનાનાનાનાન~~

၁၂၃၀

~~प्राचीनतमात्रिक्य विवरणोऽप्युपलब्ध~~

ପ୍ରକାଶନ ମାଧ୍ୟମରେ ଦୁଇମାତ୍ର ଲକ୍ଷ୍ୟରେ

दिल्ली राजा का पर्वत और दिल्ली का नाम क्या है

परमादितिया च उद्दिष्टमिराम अस्ति  
तिनो इव कर्त्यो यत्वा तत्राप्यारम्भ  
मैत्रिं उत्तमं उपग्रहितमिति तार्थे  
कुरुष्व एव ताम अस्तु न रक्षणम्  
काम दिव्यम् आरम्भी इति इति ग्रन्थं अस्ति

କରିବାକୁ ପାଇଁ ଏହାରେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା  
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା  
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

उत्तराधिकारी द्वारा नियमित रूप से अनुसार इन शब्दों का अर्थ लिखें।

उत्तराधिकारी द्वारा नियमित रूप से अनुसार इन शब्दों का अर्थ लिखें।

उत्तराधिकारी द्वारा नियमित रूप से अनुसार इन शब्दों का अर्थ लिखें।

उत्तराधिकारी द्वारा नियमित रूप से अनुसार इन शब्दों का अर्थ लिखें।

द्वारा अपनी उम्मीदों के बाहर निकल जाता है। यह एक अवधि है जिसमें वह अपनी उम्मीदों के बाहर निकल जाता है। यह एक अवधि है जिसमें वह अपनी उम्मीदों के बाहर निकल जाता है। यह एक अवधि है जिसमें वह अपनी उम्मीदों के बाहर निकल जाता है। यह एक अवधि है जिसमें वह अपनी उम्मीदों के बाहर निकल जाता है।

~~कृष्णपदव्यापी विलोपे वाचां गति  
सुभूता नाम विलोपे अनुष्टुपी धर्मी  
स्त्रियो गृहावत्तमाविलोपी वाचां गति~~

⑥ ~~ପାଦମିଳାନ୍ତିରେ କାହାରେ~~ କାହାରେ କାହାରେ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତପ୍ରକାଶନ

~~ଦୁଇବତ ପାରାଯୁକ୍ତ ଅଧିକୃତ ଶବ୍ଦରେ~~

ପାତ୍ର କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

କୁମାରପାତ୍ରନାନ୍ଦନବିଜ୍ଞାନପାଠ୍ୟମେଧାତାତ୍

କାଳେ ନାହିଁ ପିଲାଗାମ ଦିଲୋ ରୁହାରୀ

~~देवगान्धो देवान् देवान् देवान् देवान्~~

ଏବିନ୍ଦୁଙ୍କୁ ପରିଜୀଳାତମ୍ଭୁତ ହେଲାମାତିଥି

~~कृष्ण विद्या विद्यार्थी~~

~~ରତ୍ନପାତ୍ରିକାରୀ ମହାଦେଶବରାଜ~~

~~गर्वन्तु दीपाली परमानंद-कोशल छ~~

~~বাবু শাহ~~

~~गुरुद्वारा अमृतसर~~

~~ନାମିତାମ୍ବଳମହାଶର୍ମମହାରାଜ~~

କରୁଥିଲୁ ପାଇଲୁ କରୁଥିଲୁ କରୁଥିଲୁ

କୁଳାଳରେ ପାଇଲା କଣାଳ

ପାଦାନିକୀତାରୀଣାରାଧାରୀଶ୍ଵରାମ

~~ମ୍ୟାର୍କ୍ୟ ଅଧିକାରୀ ଏବଂ ପାଇଁ ଯେତେ ହୁଏଥାଏ~~

ମେଣାତ୍ରନବୀମା। ଶିଷ୍ଯରୀରମ୍ଭପଦ୍ଧତି

~~କରୁଥିଲେ କାହାର କାହାର କାହାର~~

ଶ୍ରୀମତୀ ପାତ୍ନୀ କରୁଣାଲିଙ୍ଗ ମହିଳା

~~ଦେଖିବାକୁ ପରିବର୍ତ୍ତନ କରିବାକୁ ପରିବର୍ତ୍ତନ କରିବାକୁ~~

~~କାନ୍ତିକିମ୍ବନୁ ପରିଚୟ ପରିଚୟ~~

~~ଶ୍ରୀକୃତ୍ୟାମାନାମହିମାମହିମା~~

(१) दक्षयन्त्रम् अभिनवाय विश्वा

तत्त्वाद्युपोष्टं जगत्परीष्मिति

अधिकारात्मवेष्टनं नियन्तम्

सामराद्यवासनं गोप्यं ज्ञायेत्

जायदिव्यविधिपूर्वान्तर्यामि

(२A) एतद्वृत्तो गोप्यं ज्ञायेत्

जायेत् पुण्यविधिपूर्वान्तर्यामि

कालान्तर्यामि यज्ञाविधिपूर्वा-

पूर्वान्तर्यामि यज्ञाविधिपूर्वा-

पूर्वान्तर्यामि यज्ञाविधिपूर्वा-

(२B) ग्रहान्तरान् नाभिन्नान् चापि

पूर्वान्तर्यामि यज्ञाविधिपूर्वा-

*Rajeshwar Sanskruti Mandal, Dhule and the Yagnapurush Mandir, Mumbai, India*

(8) उद्दिष्टोऽपावानामन्तरेण इष्टामृहीताच्यु  
वर्गास्त्रियात्परिक्षेत्रात्प्रभुमुक्त्वेष्टि  
परोद्याद्युपावानामृहीताच्यु  
शीराम्यद्यामात्परिक्षेत्रात्प्रभु  
मृहीताच्यु

(8A) देवोद्युपावानामृहीताच्यु  
उक्तिनिर्दिश्युपावानामृहीताच्यु  
(उक्तिप्रधान्युपावानामृहीताच्यु)

(8B) उपावानिमित्तिर्विजयामृहीताच्यु  
तेज्ञाद्युपावानामृहीताच्यु  
वास्त्रालोक्यामृहीताच्यु  
द्युपावानामृहीताच्यु  
सत्त्रालोक्यामृहीताच्यु

(8C) एवामृहीताच्यु  
प्राद्युपावानामृहीताच्यु  
द्युपावानामृहीताच्यु

(8D) राजा अवानामृहीताच्यु  
राजा अवानामृहीताच्यु

(8E) द्युपावानामृहीताच्यु

S. S. Pawade  
and the Yashwantrao Chavhan  
"Journal of the  
Marathi and the Yashwantrao Chavhan  
Patriots"



(10)

तेजस्मिन्दुरामीषमेजनकाङ्गाप्रया

द्विमैषलोपेयान्तराप्रवासामन्तरा

ज्ञापेयामउमत्तमनांशुयाचे

चालिप्रवासप्रदुषिणारविजाप्तु

तेजपतंजालप्रवत्तुग्नेष्ट्रियांशुय

प्राप्तमामत्तमनामारिकापुरवि

(10A)

नांगप्रधान्तुष्ट्रियोऽशुक्लामन्तरा

यद्यामान्तुष्ट्रियोऽशुक्लामन्तरा

चालिप्रवासप्रदुषिणारविजाप्तु

प्राप्तमामत्तमनामारिकापुरवि

(10B)

तेजपतंजालप्रवत्तुग्नेष्ट्रियांशुय

विधवामान्तरामारिकापुरवि

प्राप्तमामत्तमनामारिकापुरवि

वारानीचान्तुष्ट्रियांशुमान्तरा

टेष्ट्रियोऽशुक्लामन्तरामान्तरा

ग्रामप्रवासप्रदुषिणारविजाप्तु

(10C)

मुदिष्ट्रियांशुप्रवासप्रदुषिणारविजाप्तु

वद्येष्ट्रियोऽशुक्लामन्तरामान्तरा

स्त्रियोऽशुक्लामन्तरामान्तरा

रेष्ट्रियोऽशुक्लामन्तरामान्तरा

(10D)

विधवामान्तरामान्तरा

द्विष्ट्रियोऽशुक्लामन्तरामान्तरा

रेष्ट्रियोऽशुक्लामन्तरामान्तरा

घोषिष्ट्रियोऽशुक्लामन्तरामान्तरा

(10E)

- (11) वार्षिक धर्मोदय विद्यालय के लिए  
सदृश विद्यालय के लिए विद्यालय  
विद्यालय के लिए विद्यालय  
विद्यालय के लिए विद्यालय
- (11A) श्रीमद्भगवत् गीता विद्यालय  
विद्यालय के लिए विद्यालय  
विद्यालय के लिए विद्यालय  
विद्यालय के लिए विद्यालय
- (11B) श्रीमद्भगवत् गीता विद्यालय  
विद्यालय के लिए विद्यालय  
विद्यालय के लिए विद्यालय  
विद्यालय के लिए विद्यालय
- (11C) विद्यालय के लिए विद्यालय  
विद्यालय के लिए विद्यालय  
विद्यालय के लिए विद्यालय  
विद्यालय के लिए विद्यालय
- (11D) विद्यालय के लिए विद्यालय  
विद्यालय के लिए विद्यालय  
विद्यालय के लिए विद्यालय  
विद्यालय के लिए विद्यालय
- (11E) विद्यालय के लिए विद्यालय

(12) तमधारमचक्रांश्चाप्यप्यत्रयानाम्भिर्

सप्तश्चान्वेष्या कर्मचैक्षण्याण्डे

क्षालं द्वाग्निः द्वूषिष्व विभवद्वात्

मनोरक्षायां वेष्टदेहान्वावैक्षेय

गरुदते चक्रांश्चाद्वाप्तान्वाग्निः

द्वृक्षांश्चाद्वाप्तान्वाग्निः वेष्टेण

तच्चापेष्टिप्लचिक्षांश्चाद्वैष्टिप्लचिक्षां

द्वृक्षांश्चाद्वाप्तान्वाग्निः वेष्टेण

त्रिष्टुयात्तिगद्वृत्तेभृतात्तेव्यन्ता

वालोप्सिमेष्टिप्लमयात्तेव्यन्ता

प्रापुरीपत्राद्वाप्तान्वाग्निः वेष्टेण

प्रदद्वाप्तान्वाग्निः वेष्टेण

गृज्ञानव्रताद्वाप्तान्वाग्निः वेष्टेण

द्वृक्षांश्चाद्वाप्तान्वाग्निः वेष्टेण

रम्भांश्चाद्वाप्तान्वाग्निः वेष्टेण

द्वृक्षांश्चाद्वाप्तान्वाग्निः वेष्टेण

(13)

अर्थात् चाहते अपि उक्ते राज्यानां ग्रन्थ  
 प्रयोग्य तेय विजयान्वत्तम् भवति विजय  
 द्विप्रतिक्रिया द्वावाचारणाम् यत्तीर्णाय  
 भवति विजयान्वत्तम् भवति विजय

(137) अनुसारी उपराज्यान्वत्तम् भवति विजय  
 द्विप्रतिक्रिया द्वावाचारणाम् यत्तीर्णाय  
 भवति विजयान्वत्तम् भवति विजय  
 एषो द्विप्रतिक्रिया द्वावाचारणाम् यत्तीर्णाय

(138) अनुसारी उपराज्यान्वत्तम् भवति विजय  
 द्विप्रतिक्रिया द्वावाचारणाम् यत्तीर्णाय  
 विजयान्वत्तम् भवति विजय  
 द्विप्रतिक्रिया द्वावाचारणाम् यत्तीर्णाय

(139) अनुसारी उपराज्यान्वत्तम् भवति विजय  
 द्विप्रतिक्रिया द्वावाचारणाम् यत्तीर्णाय  
 द्विप्रतिक्रिया द्वावाचारणाम् यत्तीर्णाय  
 द्विप्रतिक्रिया द्वावाचारणाम् यत्तीर्णाय

(140) अनुसारी उपराज्यान्वत्तम् भवति विजय  
 द्विप्रतिक्रिया द्वावाचारणाम् यत्तीर्णाय

(141) अनुसारी उपराज्यान्वत्तम् भवति विजय  
 द्विप्रतिक्रिया द्वावाचारणाम् यत्तीर्णाय

(142) अनुसारी उपराज्यान्वत्तम् भवति विजय  
 द्विप्रतिक्रिया द्वावाचारणाम् यत्तीर्णाय

(143) अनुसारी उपराज्यान्वत्तम् भवति विजय  
 द्विप्रतिक्रिया द्वावाचारणाम् यत्तीर्णाय

(144) अनुसारी उपराज्यान्वत्तम् भवति विजय  
 द्विप्रतिक्रिया द्वावाचारणाम् यत्तीर्णाय



٩٦

98

ମାତ୍ରାକାଳୀନ ପ୍ରକଟିକାରୀ ଯେତେବେଳେ

यमाद्युपरिक्षेत्रानि अवधारते

କମାଳ ଚାଲା ଯାତ୍ରି ଅଧିକାରତା ହୁଏ ଥାଏ

ଶାଖାଧ୍ୟନରପାଇବାଗଠିଣ୍ୟମାତ୍ରକୁଳକାରୀ

~~ନାମରେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା~~

~~ମୁଖ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟ ପାଇଁ ଏହା କିମ୍ବା ଏହାର ଅଧିକାରୀଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଏହାର କାର୍ଯ୍ୟରେ ଏହାର କାର୍ଯ୍ୟରେ~~

~~ମହିଳାଙ୍କରୁକେବେଳିଜାଗାମେଲିବୁକଣିଧିତା~~

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତପାଠୀ କରିବାରେ ଅନୁଷ୍ଠାନିକ

~~କେବଳ ପାଦମଣିରେ ଯାଏନ୍ତି~~

~~ଶ୍ରୀକୃତ୍ସମୁଦ୍ରା-ବେଳଗୁଣିତ୍ୟ-ପରମନାନ୍ଦମାତ୍ର~~

~~ହୃଦୟରେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା~~

~~कान्होदत्त वार्षिक एवं वार्षिक अनुसंधान संस्थान~~

~~Chavara~~ Chavara

କ୍ଷାତରାଣାନ୍ତିର୍ଯ୍ୟତିର୍ଯ୍ୟ

~~ज्ञानविद्या विज्ञानविद्या विज्ञानविद्या~~

~~ଶିଖନ୍ତରୁଷାଧିକାରୀଙ୍କାମ୍ବିଦୀ~~

ଏହାପାଇଁ ଉଦ୍‌ଯୋଗିତା କରିବାକୁ ଚାହୁଁଥିଲା

~~କୋରାଟେଲୁ ବିଦ୍ୟାରୁ କାନ୍ତିଚନ୍ଦ୍ରମାହିନୀମା~~

କରୁଣାମୁଖ୍ୟପତ୍ର କିମ୍ବା କରୁଣାମୁଖ୍ୟପତ୍ରି

ପ୍ରତିକୁଳମନ୍ଦରମଧ୍ୟାପଦ୍ମଶବ୍ଦମ

ପାତ୍ରମାତ୍ରାଲିଙ୍ଗଜୀବନପାତ୍ର

ପାତ୍ର କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

१८५८-१८६० विनायक माधव शर्मा

ପ୍ରାଚୀନ କବିତା ଓ ମହାକବି ଶର୍ମିଳା

मुख्य विवरण

(१२)

यो अम्बो विभवत इरामी रामी

स्त्रीप्रजरामा देव्या लोकाम् पदिन्

ग्रहामीन निरव न राहतात विवराम

(१३) पुनरुपापात एव द्वि को गवामी

नाम्नि उभ्यु विष्वामी यत्क्रमाम

तिथिरामा वित्तम नं याचतम

ज्ञाणम् निरामा विष्वामी विश्वामी

विष्वामी विष्वामी विष्वामी विष्वामी

विष्वामी विष्वामी विष्वामी विष्वामी

(१४) विष्वामी विष्वामी विष्वामी विष्वामी

(१५) विष्वामी विष्वामी विष्वामी विष्वामी

(18)

क्षमारम्भित्वा दीक्षेण गते अव्यय  
 पद्मसन्नामेति चिरोऽप्याप्नात्वा  
 वीर्यं दृष्ट्वा यज्ञं दिव्यं त्रिमुण्डं  
 रुद्रास्त्रादीप्तिराद्य एव इति विष्णु  
 गत्वा काशेषं लयं जीर्णं उपास्य  
 उद्देश्यं त्वां च आशं दृष्ट्वा दीप्तिं

(18A)

तादीप्तिराद्य इति त्वां च विष्णु

उम्बूताद्वरां त्वां च विष्णु निर्वाल

स्त्री इति विष्णु अभिवृत्तां विष्णु

चेत्तेऽप्यद्य लग्नी यथा यज्ञाद्य अभिवृत्तां

द्वयोऽप्यद्य लग्नी यथा यज्ञाद्य अभिवृत्तां



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)